प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

मानविकी महाविद्यालय में मोटे हिमालयी अनाजों हेतु कार्यशाला का आयोजन

पंतनगर। 06 सितम्बर 2022। विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग सभागार में 'खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए मोटे हिमालयी अनाजों की वर्तमान स्थिति एवं उससे जुड़े पर्वतीय ग्रामीण कृषकों हेतु अवसर' विषयक एक–दिवसीय कार्यशाला/सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान, द्वारा विभिन्न अधिष्ठाताओं, निदेशकों की गरिमामयी उपस्थिति में राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया गया।

कार्यशाला में कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान ने बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों में उगाए जाने वाले मोटे अनाजों में अत्यधिक पोषक तत्व पाये जाते है जिससे इन फसलों को किसानोपयोगी क्षेत्रीय प्रजातियों के रूप में विकसित किया जाना वैज्ञानिकों द्वारा अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इसके लिए विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के वैज्ञानिकों को टीम बनाकर अनुसंधान किये जाने की जरूरत है, जिससे पर्वतीय क्षेत्रों के कृषकों को अधिक से अधिक जागरूक किया जा सके। डा. चौहान ने कहा कि इन फसलों के अत्यधिक पोषकीय गुणों के कारण इनकी मांग निरंतर बढ़ रही है। अतः मूल्य सवंर्धित उत्पाद बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार हेतु प्रकाशन प्रकाशित किये जाये। उन्होंने कहा कि हिमालयी राज्यों/क्षेत्रों की अधिकांश आबादी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपनी आजीविका हेतु पारंम्परिक रूप से प्रचलित एकीकृत पहाडी कृषि, पशुपालन एवं कृषि वानिकी पर निर्भर है। इस कार्यशाला के आयोजन के लिए उत्तराखण्ड जैव प्रौद्यौगिकी परिषद्, बायोटैक भवन हल्दी, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गयी।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव, डा. ए.के. शुक्ला ने बताया कि हिमालयी अनाज जैसे बाजरा, रागी (मडुवा) आदि मूल्यवान पहाडी फसलें आवश्यक यौगिकों के छिपे हुए स्रोत है। इनके महत्त्व को दर्शाते हुए कुलसचिव ने इन फसलों को पहचानने एवं दैनिक रूप से उपयोग में लाए जाने का आह्वान किया। सम्मेलन में मुख्य वैज्ञानिक विश्वविद्यालय के पूर्व पंजीयक, विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोडा, डा. डी.सी. जोशी, द्वारा अपने सार–गर्भित सम्बोधन में गोष्ठी के मुख्य उद्देश्य के बारे में उपस्थित युवा, शोधकर्ताओं को पारंपरिक पहाड़ी अनाजों, जैसे बाजरा, मडुआ इत्यादि के पोषण एवं लाभों तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में वर्णित पारम्पिरिक अनाजों की खेती की अपार संभावनाओं, क्षेत्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए बोई गयी फसल की जंगली जानवरों से सुरक्षा एवं एन्य महत्वपूर्ण पांरम्परिक तौर–तरीकों के बारे में बताया। वक्ताओं द्वारा हिमालयी क्षेत्रों में पौधों की समृद्ध जैव विविधता पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। अधिष्ठाता, विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, डा. संदीप अरोरा ने हिमालयी अनाजों, जैसे बाजरा, रागी एवं अन्य स्थानीय अनाजों की उपयोगिता साथ ही इनको पैदा करने की बात कही।

कार्यशाला के संयोजक, डा. के.सी. वर्मा ने इस कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु डा. शिव दुबे के साथ ही साथ जीव–रसायन विभाग सदस्यों एवं विद्यार्थियों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर देश भर के ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत 188 प्रतिभागियों, शोद्यार्थियों, विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों द्वारा कार्यशाला में अपने सुनिश्चित प्रतिभाग हेतु आनलाईन पंजीकरण करवाया गया।

मोटे अनाजों की प्रकाशनों का विमोचन करते कुलपति, डा. मनमोहन सिंह चौहान एवं अन्य।